तीर्थ यात्रा

अहमेव पन्थाः सत्यञ्च जीवनञ्च नान्येनोपायेन
मनुष्यः पितः समीप मायाति केवलं मया।

(मार्ग, सत्य और जीवन में ही हूँ। बिना मेरे द्वारा
कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।)
प्रभु यीशु मसीह

शिष्य थॉमसन

शिष्याश्रम
[Registered under Indian Trust Act, 1882 Reg.no-2401]
305 D/A शीषमहल, शालीमार बाग, नई दिल्ली- 110088
e-mail: jawabjawab@yahoo.com

तीर्थयात्रा

ईश्वर खोजी मनुष्यों के हृदय में एक इच्छा रहती है कि वे किसी तीर्थ पर जा सकें तीर्थ वह स्थल हो जहाँ सृष्टि कर्त्ता जीवित ईश्वर से साक्षात्कार हो सके, और इसके परिणाम स्वरूप, शाँति, आनद और जीवन मिल सके, पापों से छुटकारा क्षमा अर्थात् मोक्ष मिल सके। चलिए मेरे साथ इस पुस्तक के पृष्टों की मदद से आपको एक तीर्थयात्रा पर लिये चलता हूँ इस यात्रा में आपको थकान महसूस नहीं होगी, कठोर तप, कष्ट या दुः भोगन नहीं होगा, न धन का व्यय न दान दक्षिणा का दबाव, इस तीर्थ यात्रा में आपका हृदय और मन नये हो जायेंगे।

ईश्वर से हमारा साक्षात्कार होगा वार्तालाप होगा, और यदि हम सच्चे खोजी हैं, तो जीवित परमेश्वर से अपना संबध स्थापित कर सकेंगे और मोक्ष का दान पा सकेंगे। आज से 2000 वर्ष पूर्व सृष्टिकर्त्ता परम ईश्वर मनुष्य रुप धारण कर धरती पर आते हैं पाप का अंधकार सर्वस्व छाया था और शैतान और भूत प्रेतों के बहकावे में मनुष्य भटका हुआ था।

मनुष्य को नरक के सर्वनाश से बचाने प्रभु यीशु धरा पर आते हैं। मोक्ष मार्ग स्वयं यीशु बने, और ईश्वरीय सत्य को लेकर वे धरा पर आये और वे जो स्वयं जीवन थे, स्वेच्छा से क्रूसकी बलिवेदी पर मृत्यु दंड उठाते हैं। मानव पाप की कीमत ईष पुत्र की मृत्यु द्वारा पवित्र खून बहाने से अदा होती है। मरने के तीसरे दिन यीशु ख्रिस्त जीवित हो उठते हैं और शैतान और मृत्यु पर विजय की घोषणा करते हैं।

और स्वयं मार्ग, सत्य और जीवन होने का सबूत बनते हैं। आज प्रभु यीशु जीवित हैं वे किसी गिरजा घर में दीवार पर टंगी तस्वीर या मूर्त्ती नहीं हैं जीवित होने के पश्चात सैंकड़ों लोगों के देखते देखते उनका स्वर्गारोहण होता है और आज वो स्वर्गलोक में परम ईश्वर के दाहिने हाथ में सिहाँसन पर विराजमान हैं।

इन बातों का सबूत यह है कि यीशु ख्रिस्त के कहे हर वचन पूरे हुए हैं और होते हैं प्रभु यीशु ने अपने अनुयाईयों से कहा "यदि तुम मेरे नाम में मुझ से कुछ भी माँगोगे तो में उसे पूरा करुँगा" (यूहन्ना 14:14)

आप को कुछ भी ज़रुरत हो यीशु के नाम से प्रार्थना करिए, उत्तर अवश्य मिलेगा। चाहे पापों की क्षमा या मोक्ष प्राप्ति हो या रोग निवारण हो मानसिक शाँति की आवश्यक्ता हो, भूतप्रेतों से छुटकारा चाहते हों या पारिवारिक समस्या ही क्यों न हो यीशु नाम से प्रार्थना करके देखिए उत्तर मिलेगा। जिस मार्ग से ये तीर्थयात्रा है, वो मार्ग यीशु हैं जिस वाहन पर यात्रा होगी उसका नाम "सत्य" है और सत्य यीशु है और हमारा तीर्थ, परमेश्वर की उपस्थिति है, अनंत जीवन है मोक्ष है और प्रभु यीशु ही जीवन हैं। यूहन्ना 14:6

चलिए प्रभु यीशु के दर्शन करने तीर्थ को चलें,

शिष्य थॉमसन

वेश्या स्त्री की क्षमा और छुटाकारा

यरुशलम की धर्मनगरी के बाहर एक छोटे गाँव में जिसका नाम है बैतनिय्याह वहाँ हम अपना पहला पड़ाव करते हैं। (लूका 7:36-50)

भो परिश्रान्ता भारा क्रान्ताञ्च सर्व्वे, मम समीपमायात, तनाहं युष्मान् विश्राम यिष्यामि। (मत्ती 11:28)

हे सब परिश्रम करने वालो और बोढ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ। मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।

वहाँ प्रभु यीशु एक बार एक फरीसी के घर में खाना खाने गये, फरीसी यहूदियों के धर्मगुरू हुआ करते थे। वे बड़े धार्मिक प्रवृति के लोग थे। वो मंदिर में बैठते थे और धर्म शास्त्र का अध्ययन कराते थे। लोगों को ईश्वर के बारे में बताते थे। और अपने क्रिया करम और धर्म व्यवस्था में बड़े पक्के होते थे। उस फरीसी व्यक्ति का नाम शमौन था जिसके घर में यीशु और उसके चेलों की दावत थी।

जब वे लोग रोटी खाने के लिये बैठे तो इस धर्मगुरू ने प्रभु यीशु का स्वागत किया और उसको खाने पर बैठाया। इतने में जब वो खा रहे थे तब एक औरत उस कमरे में आई ये औरत अपने हाथ में एक इत्र लेकर आई और वो आकर प्रभु यीशु के पावों पर बैठ गई और रोने लगी और रोते हुए उसने सुगंध द्रव्य को यीशु के पाँवों पर डाल दिया। और आँसू बहाती हुई, उसके पाँवों को अपने बालों से पोंछने लगी।

ये देखकर जो धर्मगुरू थे जो फरीसी कहलाते थे उनको दुविधा हो गई वो परेशान हो गये कहने लगे अपने मन में कि ये कैसे हो गया एक पापिनी स्त्री है जिसका समाज में कोई स्थान नहीं है गिरी हुई औरत है असामाजिक अनैतिक धंधे में फँसी है बस्ती के लोग जानते हैं ये बुरा जीवन जीती है, तो प्रभु यीशु ने क्यों इस औरत को इजाजत दी कि वो उसे नज़दीक आने दें और अपने शरीर को छूने दें और अपने पाँव पर उसको इत्र लगाने दें।

प्रभु यीशु ईष पुत्र हैं सर्व ज्ञानी थे, उनको मालूम पड़ गया उनके हृदय में कि शमौन फरीसी क्या सोच रहा है। और लोग क्या सोच रहे हैं।

उसने कहा जो औरत ने किया है वो पश्चाताप है। वो ठीक है ये अपने पापों से परेशान थी, और उसने अपने पश्चाताप को प्रगट किया है।

प्रभु यीशु ने कहा इस स्त्री के जो पाप हैं इसे में क्षमा करता हूँ।

जब उसने ये शब्द बोले तो बहुत लोग, जो उस कमरे में थे असमंजस में पड़ गये, कि ये व्यक्ति आरि एक आम मनुष्य की तरह दिता है। लेकिन क्या इसे पाप क्षमा करने का अधिकार है। प्रभु यीशु ने उनके हृदय के विचारों को जानकर उनसे कहा मनुष्य के पुत्र को पाप क्षमा करने का अधिकार प्राप्त है।

प्रभु यीशु अपने आप को मनुष्य का पुत्र कहते थे इस का अर्थ यह नहीं था कि वे परमेश्वर के पुत्र नहीं थे। मनुष्य के पुत्र का मतलब है कि वे एक आम आदमी बनकर धरती पर आये हैं। आम समाज में रहे हैं। गरीबों के पास लाचारों के पास समाज के गिरे लोगों के पास वो आये हैं। प्रभु यीशु ने आकर परमेश्वर के प्रेम के बारे में बताया है।

धार्मिक लोग अपने धर्म की परिधी में रहकर सोचते हैं कि वे बहुत अच्छे हैं। और परमेश्वर उनसे खुश है। क्योंकि वे धरम करम के काम करते हैं। अधिकतर समय धर्मस्थलों व आराधनालयों बिताते हैं। भजन कीर्तन करते हैं धर्मशास्त्र पढ़ते हैं। प्रार्थना करते हैं और शायद परमेश्वर उनसे प्रसन्न है। लेकिन परमेश्वर दीन दुखियों और पापियों के छुटकारे के लिये आया है। और सच्चाई तो यही है कि हर मनुष्य पापी है। प्रभु यीशु ने कहा एक बीमारको डोक्टर की ज़रूरत है। इसी तरह एक पापी व्यक्ति को ईश्वर की ज़रूरत होती है। ताकि वो उसके पापों को क्षमा करे उसके पापी स्वभाव का इलाज करे और नया जीवन दे।

प्रभु परमेश्वर मनुष्य से प्रेम करते हैं। और प्रेम करने वाली ये बात बाईबिल में लिर्ा है। और लिा है कि परमेश्वर मनुष्य से प्रेम करते हैं। कई लोग सोचते है कि ये कैसे हो सकता है। इतने अपराध और कतल हो रहे हैं। बलात्कार हो रहे हैं। झूठ है। धोा है। चोरी है। लेकिन इसके बाद भी यह सच है कि परमेश्वर प्रेम करता है। प्रभु यीशु वो हैं जो चोरों से भी

प्रेम करते हैं। डाकुओं से भी प्रेम करते हैं। सारी बुराई करने वालो से भी प्रेम करते हैं। आरि कैसे? समझिये की मेरा एक छोटा बच्चा है उसको कैंसर हो गया है वो मरने वाला हे कैंसर बहुत फैला हुआ है तो आप क्या सोचते हैं मैं अपने बच्चे से नफरत करूँ? हाँ मैं कैंसर से तो नफरत करता हूँ लेकिन अपने बच्चे से तो प्रेम करता हूँ।

इसी तरह प्रभु यीशु मसीह और पिता जो स्वर्ग में हैं पापी मनुष्य से तो प्रेम करते हैं। लेकिन पाप जो एक बीमारी की तरह लगा हुआ है उससे नफरत करते हैं। उसका निवारण करने आये है इसीलिये प्रभु यीशु मसीह पापियों के बीच में आये शराबी, वेश्याऐं, चोर और अपराधी लोग उनकी संगत कर सकते थे। और वे उनको पिता परमेश्वर का शुभ संदेश देते थे, उन्हें ईश्वर के बारे में बताते थे वे कहते थे कि स्वर्ग में कोई खूनी, क्रोधी, ईश्वर नहीं बैठा हुआ है। कोई ईश्वर जो खतरनाक है मार काट करने वाला है। स्वर्ग में हमारा सृष्टिकर्त्ता पिता है। जो मनुष्य से प्रेम करता है। और वे पिता हमें बचाने के लिये अपने प्रिय पत्रु प्रभु यीशु को इस संसार में भेजते हैं इसी कारण प्रभु यीशु अवतार हुये।

अब मन में सवाल आता है। कि प्रभु यीशु क्यों आये? में बताना चाहता हूँ कि प्रभु यीशु आपके लिये आये, यदि सारे संसार में केवल आप एकमात्र व्यक्ति ही क्यो न होते तो भी आपको बचाने प्रभु यीशु आ जाते उन्होंने प्रेम दिया और स्वयं को क्रूस की बलिवेदी पर कुरबान कर दिया। उनको दु उठाना पड़ा वे मारे गयें दफनाये गये और तीसरे दिन जी उठे। और आज वो जीतित है, आप उनसे प्रार्थना द्वारा आत्मिक दर्शन कर सकते हैं। आपकी प्रार्थना का वे उत्तर देंगे। विश्वास के द्वारा ये यीशु दर्शन तीर्थ संभव है।

धर्मस्थल में व्यापार

प्रभु यीशु के पद चिन्हों को देते देते अब हम यरुशलम की धर्म नगरी चलते हैं।

ईश्वर आत्मा यैश्च तस्योपासनं क्रियत आत्मना सत्येन चोपासनं तैः कर्त्तव्यम् *(यूहन्ना 4:24)*

परमेश्वर आत्मा है और अवश्य है, कि उसकी आराधना करने वाले, आत्मा और सच्चाई से उसकी आराधना करें।

प्रभु यीशु कहते हैं परमेश्वर आत्मा है। और जो उसके उपासक हैं जो उसके भक्त हैं उन्हें परमेश्वर की आराधना आत्मा और सच्चाई से करनी होगी।

यरुशलम शहर था जहाँ पर यहूदियों का बड़ा मंदिर था। परमेश्वर के भक्त लोगों ने एक भव्य विशाल मंदिर बनाया था। और उसे बनाने में छियालीस साल लगे थे बहुत ही सुंदर मंदिर था। और उस मंदिर में उपासक भक्त लोग हमेशा इकट्ठे रहते थे। धर्मगुरू अपनी संत्संग वहाँ चलाते रहते थे।

प्रभु यीशु ईश्वर हैं। और सर्वज्ञानी हैं। लेकिन जब आम मनुष्य बनकर इस संसार में आये, तो उन्होंने मंदिर में अपना काम चालू नहीं किया। वो गाँव गाँव गये पैदल चले। आम आदमी से संगत की। जो बीमार थे उन्हें ठीक किया। अंधों को आँ दी जिनको कोढ़ था उनके कोढ़ को शुद्ध किया। जो सुन नहीं सकते थे जो दे नहीं सकते थे। जो बोल नहीं सकते थे उनको स्वस्थ किया आँधी तूफान को थमा दिया। मात्र पाँच रोटी और दो मछलियों से उसने हज़ारों भूखों को लिाया। मुर्दों को जिंदा किया ऐसे ऐसे चमत्कारी व महान् कार्य करते हुये प्रभु यीशु ने स्वर्ग के राज्य और उसके जीवन का प्रचार प्रारंभ किया। पाप से छुटकारा क्षमा और मोक्ष का शुभ संदेश, दिया।

इसके बाद हम बाईबल में देते हैं। कि उनके क्रूस पर अपनी कुरबानी देने के एक सप्ताह पहले प्रभु यीशु मसीह यरुशलम शहर में आते हैं। शहर के बाहर एक गाँव है। जिसका नाम बैतनिय्याह है वहाँ से वे यरुशलम में

प्रवेश करते हैं, यरुशलम में वो एक गधे पर सवारी करके आते हैं। बाहर पहाड़ी पर से यरुशलम शहर दि रहा था। और उसको देकर वो रो पड़े इसलिये नही रो पड़े कि उनको आदर नहीं मिल राह था। या डर था कि यरुशलम के निवासी हिंसा पर उतर आयेंगे। परन्तु इसलिये रोऐ क्योंकि उन्होंने दे ा यरुशलम जो धर्मनगरी कहलाता है जो धार्मिक स्थल है। और तीर्थयात्रा का केन्द्र है। वहाँ सर्वत्र अधर्म फैला हुआ है। लोग पाप में लिप्त हैं। लोग अधर्म का जीवन जी रहे हैं। परमेश्वर से अलगाव और बगावत का जीवन है। धर्म के नाम पर अधर्म फैला हुआ है। इस तरह की अवस्था दे कर उन्हें रोना आया और वे रो पड़े।

यरुशलम उस ज़माने का एक बड़ा ओर प्रसिद्ध शहर था। धर्मयात्रा का केंन्द्र था। सारी दुनिया की नज़र उस पर रहती थी। यूनानी और रोमी साम्राज्यों ने उस पर अधिकार किया था। विजयी सेनाओं ने उसमें प्रवेश किया था, उनके गवर्नर सारे वैभव से वहाँ रहते थे,। उनका प्रवेश घोड़े, हाथियों और रथों से होता था। और उनके साथ हथियारबंद सैनिक होते थे। यहाँ दूसरा ही नज़ारा है। प्रभु यीशु ईश्वर के पुत्र स्वयं जो राजाधिराज हैं। सृष्टिकर्त्ता हैं। वे एक गधे पर सवार होकर प्रवेश करते हैं। शहर के गरीब जिन्होंने यीशु के हाथों भले काम दे और अनुभव किये वे रास्तों पर निकल आये। वे नारे लगाने लगे। जय हो उस राजा की जो परमेश्वर के नाम से इस शहर में आता है। यह देकर वहाँ के अभिमानी धार्मिक लोग बहुत परेशान हो गये। जलन की आग हृदय में भर गई वे बोलने लगे कि ऐसा क्यों? ये आपकी प्रशंसा कर रहे हैं? प्रभु यीशु बोलते हैं। यदि ये चुप रहेंगे तो पत्थर बोल उठेंगे। क्योंकि यही तो सत्य है। प्रभु यीशु राजा बनकर आये हैं लेकिन साँसारिक तरह से नहीं।

बाईबल में सैंकड़ों साल पहले भविष्यवाणी हुई थी कि तुम्हारा राजा गधे पर बैठकर आ रहा है। ऐसा नम्र बनकर ऐसा दीन बन कर आया ईश्वर अवतार प्रभु यीशु, उसके न हाथ में तलवार है न भाला हैं न किसी का सर हाथ में है न कुचलने का इरादा है। वो हमसे प्रेम करता हुआ नम्रता से भरा गधे पर बैठकर शहर में आता है। यरुशलम शहर में आ कर वो क्या करता है? सीधा प्रवेश करता है। यहूदियों के मंदिर में इसलिये नहीं कि भक्तों को जमा करने का या, धन संपत्ति इकट्ठी करने का या सत्संग करने का कोई

इरादा था? वहाँ जहाँ पर धर्मगुरूओं का सिहांसन है, बड़े बड़े धार्मिक संत महात्मा गुरू बैठे रहते हैं।

वहाँ उसे क्या दिाई देता है? वहाँ पर व्यापार चल रहा है। लोग बकरियों गाय बैल कबूतर बेच रहे हैं। वहाँ पैसों का आदान पहान हो रहा है। धन का आदान प्रदान व्यापार केंद्र हो गया है। ईश्वर के नाम पर धन और धर्म के नाम पर व्यापार। ईश्वर के नाम पर मुनाफा, नाम है मुँह में ईश्वर का, पर हृदय में है जाल पैसों का प्रभु यीशु आये और उन्होंने वहाँ के व्यापारियों को निकाल बाहर किया। उनसे कहा शास्त्र में लिा है, कि तुमने मेरे घर को जो प्रार्थना का भवन है। उसको डाकुओं की खोह बना दिया है। परमेश्वर का घर सच्ची भक्ति का घर होगा, प्रभु यीशु ने उन्हें वहाँ से निकाल दिया उन्होंने ईश्वरीय सन्देश दिया, कि मनुष्य को आत्मा और सच्चाई से ईश्वर की आराधना करनी होगी। परमेश्वर, मनुष्य निर्मित भवन या बिल्डिंग में नहीं रहता है। पत्थर के बने आराधनालयों को गिरजा घरों को नहीं चाहता है।

प्रभु यीशु लोगों को आगाह करते हैं। और कहते हैं। तुम्हारे इस आराधनालय में एक पत्थर के ऊपर दूसरा पत्थर नहीं टिकेगा। लेकिन अवश्य गिरा दिया जायेगा। लोग क्रोधित होकर प्रभु यीशु से पूछते हैं। कि तुम किस अधिकार से इस मंदिर की सफाई कर रहे हो? प्रभु यीशु के पास क्या अधिकार प्राप्त था? वो यह था कि वे स्वयं अवतार ईश्वर के पुत्र थे वे ही आराधना के केन्द्र थे। सारी सृष्टि उनके हाँथ से बनी थी वही पालनहार हैं। सेवक बनकर आयें हैं। लोग आज यीशु से प्रार्थना करते हैं। जीवित ईश्वर हमारी प्रार्थना हर जगह से सुन सकता है, परमेश्वर धर्मस्थलों में नहीं लोगों के दिलों में अपनी परम आत्मा द्वारा जीना चाहता है।

गुरू, शिष्यों के पाँव धोते हैं।

चलिये यरुशलम शहर की गली में एक कमरे में प्रभु यीशु शिष्यों के साथ रात का भोजन कर रहें हैं। और फसह के त्यौहार का समय है। जब परमेश्वर के महान् छुटकारे को याद किया जाता है।

युष्माकं मध्ये यश्च महत्तमः स युष्माकं परिचारको भविष्यति।
मत्ती 23:11

जो तुम में बड़ा हो, वह तुम्हारा सेवक बने।

यहाँ देते हैं कि प्रभु यीशु अपने चेलों के साथ रात में आरिी भोजन कर रहे हैं। रात को ही धर्मान्ध लोग और रोमी शासक उन्हें गिरफ्तार करेंगे और उसके बाद वे उसको पकड़ कर ले जायेंगे। और अगले दिन क्रूसित करके उसकी हत्या करेंगे। लेकिन अब रात को वे अपने चेलों के साथ अंतिम भोजन कर रहे हैं। भोज करते समय उनको यह परमेश्वर की ओर से ज्ञात हो गया था कि उनकी घड़ी आ पहुची है। और स्वर्ग के, पृथ्वी पर के, और अधोलोक के सारे अधिकार पिता परमेश्वर ने उनके हाथ दे दिये हैं। भोज के दौरान वे अपने शिष्यों से कहते हैं कि यदि तुम एक दूसरे से प्रेम करोगे, तभी तुम मेरे शिष्य कहलाओगे। और तब लोग जानेंगे कि तुम मेरे शिष्य हो।

और तब उन्होंने एक नई आज्ञा अपने शिष्यों को दी और वह यह कि तुम एक इसरे से ऐसा प्रेम करो जैसा मैंने प्रेम किया है। चलिए देखते हैं कैसा प्रेम किया था प्रभु यीशु ने? जब हाथों में सारी ताकत उन्हें दिाई दी, तो प्रभु यीशु अपनी कुझीं से ऊपर उठ ड़े हुए। और उन्होंने नौकर के कपड़े पहने, पानी लिया और अपने चेलों के पाँव के पास बैठे। और उनके पाँवों को अपने हाथ से धोने लगे। यह प्रेम का प्रदर्शन था। सेवा का सर्वोच्च उदाहरण था। क्या आपने कभी सुना है, कि कोई गुरू कभी अपने शिष्यों के पाँव धोता है? नहीं सुना होगा यूहन्ना 13 में लिा है। प्रभु यीशु ड़े हुए और अपने शिष्यों के पाँव धोने लगे, उन्होंने कहा मैंने इस तरह पाँव धोकर तुम्हें सिाया है। कि ऐसा ही जीवन तुम्हारा होना चाहिये। तुम्हें भी

एक इसरे की सेवा करनी चाहिये तभी लोग कहेंगे तुम्हारे पास ईश्वरीय जीवन है। तुम मेरे शिष्य कहलाओगे। बहुत से धार्मिक काम तो होते हैं पर साथ में ईश्वरीय जीवन नहीं होता है। धर्म हमारे पास है गतितिधियाँ हैं क्रिया कलाप हैं, त्योहार हैं, पर ईश्वरीय जीवन नहीं है। पैसा बहाया जाता है। दान दक्षिणा होती है। लेकिन उसके पीछे क्या प्रेम है?

प्रभु यीशु कहते हैं कि तुम ऊपरी दिावे का धार्मिक जीवन जीओगे तो क्या लाभ होगा। प्रेम के बिना सब खोला है। यदि हम धर्म के नाम पर किसी को दान देते हैं। और फिर अेबार में अपना नाम छपवाते हैं तो उसमें क्या बढ़ाई है। हम धार्मिक कार्य करते हैं पर उससे भी नाम कमाना चाहते हैं।

प्रभु यीशु ने कहा कि तुम्हें मेरे समान जीवन जीना होगा। जैसे मैंने सेवा की वैसे ही तुम्हें करनी होगी। मैंने गुरू हो कर तुम्हारे पाँव धोये हैं। तुम्हें भी दूसरों के सेवक बनना पड़ेगा। अपने से बड़ों का आदर तो सब कर लेते हैं। लेकिन अपने से छोटे लोगों के नौकर बनना है। दलितों की सेवा और आदर करना है। यह जानकर भी की सारे अधिकार उसके हाथ में है वो कुर्सीं से उठ जाते हैं।

हमारे साथ क्या होता है जब अधिकार आता है। हमारे पास पैसे आ जाते हैं। हमारा बिज़नेश बड़ा हो जाता है। नौकरी में तरक्की हो जाती है। पैसे जमा होने लगते हैं। तो हम क्या करते हैं? क्या कुसीं से ड़े हो जाते हैं? सेवा करने के लिये? या कुर्सी पर जम कर बैठ जाते हैं। लोगों का आदर चाहते हैं नमस्कार स्वीकार करते हैं। और सबसे स्वयं की सेवा कराते हैं।

प्रभु यीशु का जीवन देखिये कैसे वे स्वर्ग से उतर कर आये। बाईबल में फिलिप्पियों की किताब 2:5 से प्रभु यीशु के बारे में इस तरह लिा है। कि वो स्वयं परमेश्वर थे। परमेश्वर के बराबर थे। लेकिन उन्होंने अपने ताज को उठाया, और अलग रा, अपने अधिकारों को किनारे किया व नौकर बने। संसार में आये। और उन्होंने संसार में आकर केवल हमारी सेवा ही नहीं कि, या पाँव ही नहीं धोये पर उन्होंने हमोर लिये क्रूस पर जान दे दी। उन्हें मारा पीटा गया उन पर थूका गया, सब कुछ उन्होंने सह लिया। क्योंकि वो हमसे प्रेम करते हैं। वे हम सब के पाप मोचन के लिये जान भी देने के किये तैयार हो गये। कौन देता है जान दूसरे के लिये? प्रभु यीशु के बारे में

बाईबल कहती है, जब हम परमेश्वर के शत्रु थे, तब ही प्रभु यीशु हमारे लिये बलिदान देते हैं। क्रूसित हो जाते हैं प्रेम को प्रगट करते हैं आज बहुत से लोग हैं दुनिया में जो प्रभु यीशु के प्रेम के स्वीकार नहीं करते हैं। उनका तिरस्कार करते हैं और उनसे नफरत भी करते हैं। लेकिन प्रभु यीशु फिर भी ऐसे लोगों से भी प्रेम करते हैं। उन्हें हर दिन क्षमा करते हैं। उनसे निवेदन करते हैं। आमंत्रित करते है। उनकी सेवा करना चाहते हैं। उनको सत्य बताना चाहते हैं।

उसके शिष्य बनने के लिये न वो आपसे धन लेंगे, न आपसे गुरू दक्षिणा लेंगे वो आपसे अपनी सेवा नहीं करायेंगे, स्वयं सेवक बन कर वो आये हैं। आप क्यों न उसके पास आयें। यीशु मसीह के पास आकर देखिये जरा उसको नज़दीक से आकर देखिये। आपको एक ऐसा जीवित गुरू मिला है, जो आपका सेवक बनकर आपका साथी बनकर चल सकता है। और आपको रास्ता दिखाना चाहता है। बाईबल में लिखा है। प्रभु यीशु धरातल में शून्य स्तर पर आ गये। शून्य का अर्थ है उन्होंने अपने आप को इतना छोटा कर दिया। इतने सादे बन गये ताकि समाज के निम्न स्तर में गिरे हुऐ लोगों से भी वो संगती कर सकें। यहीं तो महान प्रेम मिलाप ईश्वर और मनुष्य के बीच में प्रभु यीशु ने किया है।

बाईबल में लिखा है। पिता परमेश्वर ने इसीलिये प्रभु यीशु को ऐसा नाम दिया है जो सब नामों में श्रेष्ट है। और बाईबल कहती है, कि परमेश्वर की यह इच्छा है। कि प्रभु यीशु के नाम से हर एक घुटना झुक जाये सिर झुक जाये। उस को प्रणाम करे। चाहे पृथ्वी पर स्वर्ग पर या अधोलोक में क्यों न हो। उन्होंने शक्ति या भय के सहारे हमें आराधक नहीं बनाया है। प्रभु यीशु ने प्रेम करके हमारे पाँव धोकर हमसे निवेदन किया है। हम क्यों न परमेश्वर के प्रेम को पहचाने और उसे प्रणाम करें।

मृत्युदंड देने वालों को क्रूस पर से क्षमादान

चलते हैं अब यरुशलम शहर के बाहर एक छोटे पहाड़ पर जिसे कलवरी कहते हैं, प्रभु यीशु का क्रूस है। और प्रभु यीशु क्रूस पर चढ़ाये गये हैं।

अत्र किं वदानि? पित: दण्डा दस्मान्मां तारय।
प्रत्युतैतदर्थमहं दण्डमिमं यावदा गतवान्। यूहन्ना 12:27

अब मैं क्या कहूँ? क्या यह कि हे पिता मुझे इस घड़ी से बचा? परन्तु मैं इसी कारण इस घड़ी को पहुँचा हूँ।

क्रूस पर चढ़ने के एक दिन पूर्व प्रभु यीशु अपने शिष्यों के साथ हैं। और उनसे कहते हैं।

मेरा जी व्याकुल हो रहा है तो में क्यों कहूँ? क्या ये कि हे स्वर्गीय पिता इस घड़ी से मुझे छुड़ा लीजिये। ताकि मुझे मौत न झेलनी पड़े। और मैं बच जाऊँ? इसका उत्तर भी प्रभु यीशु स्वयं देते हैं। वे कहते हैं में क्रूस की बली देने के लिये ही इस संसार में जन्म लेकर आया हूँ।

मृत्यु के पहले और आखिर दिन प्रभु यीशु रात को अपने शिष्यों के साथ भोजन कर रहे हैं। और उनका एक शिष्य यहूदा था। वही प्रभु यीशु को धोखा देकर पकड़वाने वाला था, साड़े तीन साल ये शिष्य, प्रभु यीशु के साथ घूमता रहा, उसके प्रवचनों को सुना। और जो महान् चमत्कार प्रभु यीशु ने किये उन सबको उसने आँखों से देखा था। उसके साथ रहकर उसकी भलाई और उसके प्रेम को देखा था। इसके बाद भी वह प्रभु यीशु को पकड़वाने के लिये तैयार हो जाता है। उसको पैसों का लालच था। धार्मिक गुरूओं ने प्रभु यीशु को रात के अंधेरे में पकड़वाने की साजिश रची थी। जब भीड़ नहीं होगी, और तीस चाँदी के सिक्कों में पकड़वाने की बात तय हुई थी। यहूदा ने वादा किया कि अंधेरे में उनको पकड़वाने का प्रयास रहेगा। क्योंकि उसे मालूम था कि वह बाग में अक्सर प्रार्थना करने रात को जाया करते थे।

एक बात यहाँ समझ में आती है, चाहे हम कितने भी धार्मिक क्यों न हों और हमारा जीवन अंदर से आत्मा में बदला हुआ नहीं हो, तो हम गुनाहों की पकड़ में जीवन बिताते रहेंगे हालाँकि हम धर्मस्थानों में जाते रहते हैं।

प्रार्थना करते हैं। धर्मशास्त्र का अध्ययन करते हैं। लेकिन जीवित ईश्वर से साक्षात्कार नहीं होता है। और जीवन वही पुराना पापमय रहता है। क्रिया करम रीतिरिवाज का पालन करते रहते हैं। पर दैनिक जीवन पाप से पराजित है। झूठ, धो, लालच और वासना के विचार सब हमारे अंदर भरे रहते हैं। यह हाल होते हुये भी हम धर्मस्थल में नकली चेहरा अवश्य दिते हैं।

यहूदा एक शिष्य था। प्रभु यीशु के साथ तो चलता था पर उसका जीवन नहीं बदला था। यहाँ पर हम देते हैं कि जब वो भोजन कर रहे थे। उस समय शिष्य साथ थे और प्रभु यीशु को मालूम था, कि कौन सा शिष्य उन्हें पकड़वायेगा। लेकिन ऐसे मौके पर भी हम प्रभु यीशु के प्रेम को साफ देते हैं, प्रभु यीशु ने साथ रोटी ाते समय भी यह भेद नहीं बताया। दूसरे शिष्यों को नहीं बताया और न ही आरोप लगाया की यहूदा धोबाज़ है। और उसे पैसों से पकड़वायेगा।

किसी तरह से उसे निंदित नहीं किया। वे ामोश रहे। उन्हों ने इतना ही कहा कि तुममें से एक मुझे पकड़वायेगा प्रभु यीशु ने अपने पकड़वाने वाले को भी बुरा भला नहीं कहा, न उसको नीचा दिाया। और फिर जब वे गतसमनी नामक बाग में चले जाते हैं तो यहूदा जाकर वहाँ के धार्मिक नेताओं को लेकर, तलवार और लाठी लेकर रोमी सैनिकों के साथ बाग में आता है। और प्रभु यीशु को यहूदा चूमा देने के चिन्ह से पहचान कराकर अंधेरे में उनके हाथों पकड़वा देता है।

प्रभु यीशु चाहते तो कोई चमत्कारिक कार्य करके उनके हाथ से छूटकर जा सकते थे। क्योंकि प्रभु यीशु ने हर दिन दूसरों के लिये चमत्कारी ईश्वरीय कार्य किए थे। चाहते तो वहाँ से भाग सकते थे। लेकिन प्रभु यीशु ने अपनी जान बचाने की कोशिश नहीं की। उन्हें मालूम था कि जब वे यरुशलम शहर में आयेंगे तो धार्मिक गुरू वडयंत्र करके उन्हें मृत्युदंड देंगे। साड़े तीन साल की जनता में सेवकाई के दौरान उन्होंने लगातार कहा था कि मैं पापों के निवारण और मनुष्य के मोक्ष उपाय हेतू बलिदान होने के लिये ून बहाने आया हूँ।

उन्होंने अपने आप को बचाने का प्रयास नहीं किया। अपनी ईश्वरीय शक्ति के प्रयोग से अपने दुश्मनों का सर्वनाश नहीं किया। प्रभु यीशु ने पहले कहा था में दंड देने नहीं, बचाने आया हूँ हम देते हैं, कि लोग उन्हें पकड़ कर यरुशलम के महामंदिर में धार्मिक गुरूओं के पास ले आते हैं। धर्मगुरू उनसे बहुत सवाल करते हैं। प्रभु यीशु उनसे कहते हैं मैं तम्हारे बीच था, बाजारों में गलियों में मैं फिरा तुम्हारे मंदिरों में मैं सच्चे ईश्वर की शिक्षा देता

था लेकिन तुम चोर डाकुओं की तरह मुझे पकड़ने आये हो। उसने अपने तर्क देकर उनके हाथों से छूटना नहीं चाहा उसने कहा मैं सत्य की साक्षी देने आया हूँ। और सत्य मैं ही हूँ किसी ने भी यीशु में पाप या अपराध नहीं पाया। जब उसे पीलातुस जो उस समय का रोमी गवर्नर था, उसके पास ले गये, तो उसने भी जाँच पड़ताल करके कहा कि मैं इसमें कोई दोष नहीं पाता हूँ। लेकिन धर्म गुरू चिल्लाते रहे इसे क्रूसित करो क्रूसित करो क्रूस पर चढ़ाओ, तब प्रभु यीशु को क्रूस पर चढ़ाया जाता है। सिर पर काँटो का ताज है बदन कोड़ों की मार से लहूलुहान है। उसके कपड़े उतार कर आपस में सिपाही बाँट लेते हैं। लंबी कीलों से उसके पाँव और दोनों हाथ, क्रूस के काठ पर ठोक दिये जाते हैं।

क्रूस की दर्दनाक मृत्यु को वे उठाते हैं। लोग हंसते हैं। और उसको नीचा दि ाते हैं। उसका मज़ाक उड़ाते हैं। क्रूस पर लटके हुये प्रभु यीशु कहते हैं। "हे पिता इन्हें क्षमा करिए क्योंकि ये नहीं जानते हैं कि क्या कर रहे हैं।" क्रूस पर लटकते हुये अपनी हत्या करने वालों को वे प्रेम का संदेश देते हैं।

जब वो क्रूस पर लटके थे, तो अचानक सारी पृथ्वी पर अंधकार छा गया। सूरज की रोशनी बंद हो गई सारे ब्रम्हांड में अंधकार हो गया तीन घंटे के लिये भरी दुपहरिया में अंधेरा था। ये परमेश्वर की तरफ से एक चिन्ह था। संसार का सारा दुष्कर्म और हमारा झूठ हमारा लालच और जो सरकार का अन्याय है। जो धर्मगुरूओं का पाखंड है, जो हमारा कपट है जो हमारा धो है। ये सब प्रभु यीशु के क्रूस पर यीशु के शरीर पर लादा गया है। प्रभु यीशु ने ये सब उठा लिया कुछ समय के लिए सांकेतिक रुप से सारी सृष्टि अंधकार को ओढ़ लेती है। क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र प्रभु यीशु पर हम सब के पापों का बोझ डाल दिया था। परमेश्वर का प्रिय पुत्र प्रभु यीशु इतना घृणित लगने लगा था वह हम सबके पापों को लेकर, पाप का दंड उठा लेता है। अंधकार मिटाने के लिये यीशु आये थे, हमारे अंधकार को उसने उठा लिया और क्रूस पर मारे गये। और उन्होंने प्राण समर्पित कर दिये, प्रभु यीशु कहते हैं। "संसार की ज्योति मैं हूँ। जो मेरा अनुसरण करता है, वह अंधकार में कभी नहीं चलेगा, पर जीवन की ज्योति प्राप्त करेगा"

प्रभु यीशु कहते हैं। तुम्हारे पापों कि क्षमा दिलाने के लिये मैं मृत्युदंड उठाता हूँ, और अपना जीवन तुम्हें दान के रुप में देता हूँ। ये परमेश्वर का वरदान है ऐसा जीवन जो प्रभु यीशु का जीवन है। जिसमें दया प्रेम और पवित्रता है।

वह आपको आज शाश्वत् जीवन दे सकता है।

हत्यारे डाकू का स्वर्ग में प्रवेश

चलिये तीर्थयात्रा जारी रें आज भी यरुशलम के बाहर पहाड़ पर क्रूस पर लटके हुए प्रभु यीशु हैं। और उनके साथ दो अन्य डाकुओं को भी आजू बाजू लटका हुआ देते हैं।

अनन्तं जीवनन्त्विदं यत् त एकं सत्यमीश्वरं त्वां त्वत्प्रेरितं यीशु ख्रीष्टञ्च ज्ञास्यन्ति यूहन्ना 17:3

अनंन्त जीवन यह है कि वे आप अद्वैत्, सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को जिसे आप ने भेजा है, जाने।

यहूदियों के धर्मगुरूओं ने, रोमी सरकार ने और आम जनता ने मिलकर प्रभु यीशु को क्रूस पर लटका दिया। उस पर झूठे आरोप लगाये, उसको मारा पीटा, उस पर थूका, उसको कोड़े लगाये। उसके सिर पर काँटो का ताज पहनाकर, उसे राजा का स्वरूप देकर अपमानित किया। उसका ून बहाया, उसको नीचा किया। लोगों ने उस पर ताने मारे सिपाहियों ने सिर पर और बदन पर डंडे मारे, ये सारे हालात होने के बाद यीशु को वो शहर के बाहर लेकर गये। और उसको क्रूस पर चढ़ा दिया।

जैसा तस्वीरों में कई बार दिाई देता है। वहाँ लकड़ी के क्रूस पर जब वे लटके हुए थे तो उनके दोनों बाजू में दो डाकू जो हत्यारे बागी थे उन को भी उसी दिन सज़ाए मौत हो रही थी। रोमी सरकार ने और यहूदियों ने यीशु को अपमानित करने के लिये उसे दो डाकुओं के बीच में लटकाया था। ताकि लोग और भी उसकी हँसी उड़ायें। और उसे पापी दुष्कर्मियों का सरदार घोषित करें।

पीलातुस जो रोमी गवर्नर था उसने क्रूस के ऊपर एक तख्ती लगा री थी उस तख्ती पर उसका नाम था। और इस प्रकार लिा था "यीशु नासरी यहूदियों का राजा" ये उसका अपमान करने के लिये उन्होंने लगाया था। जब प्रभु यीशु पैदा हुऐ थे, एक चरनी में, गाय, बकरियों, भेड़ों के बीच में और उनके लिये न घर में और न कहीं भी बेतलहम शहर में रहने की जगह थी। और उनके जन्म के समय ज्योतिषी लोग आये थे ढूँढते हुए और पूछते थे

कि कहाँ पैदा हुआ है वो जो यहूदियों का राजा है? क्योंकि हमने उसका चिन्ह आसमान में देकर पहचाना है। वे ज्योतिषी पहले राजा हेरोदेस के घर में यरुशलम में पहुँचे और सोचते थे शायद यहीं वो पैदा हुआ होगा। उन्हें यह मालूम नहीं था कि ईश्वर पुत्र प्रभु यीशु कंगाल बनकर इस संसार में अवतार होकर आये हैं। और गरीब परिवार में उनका जन्म हुआ था प्रश्न था यहूदियों का राजा कहाँ पैदा हुआ है? इस प्रश्न का उत्तर हमें 33 साल के बाद क्रूस पर लगी तख्ती में मिलता है। वहाँ इस तरह लिा है। "यहूदियों का राजा यीशु नासरी"।

क्रूस पर दर्दनाक मृत्यु सहता हुआ व्यक्ति, क्या राजा हो सकता है? मृत्यु तो सांसारिक रूप से एक हार कहलाती है। लेकिन परमेश्वर के लिये ये एक विजय है। क्योंकि मानव मात्र को पाप से मुक्ति और क्षमा दिलाने का यह परमेश्वर का एक अनोा उपाय है। परमेश्वर ने हमारे लिये एक रास्ता निकाला है, जिसके द्वारा हम परमेश्वर से जीवन प्राप्त कर सकते हैं। हमारा मृत्युदंड किसी और ने उठाया है। और उस पर हम विश्वास के द्वारा नया जीवन और मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं।

वहाँ खड़े लोग गालियों दे रहे थे। कोई बोलता था कि तुमने बहुत भले काम किए थे। तुमने बहुत से लोगों की बीमारियां दूर की थी और मृत्यु से बचाया था। अब तुम स्वयं क्यों नहीं क्रूस पर से उतर कर आ रहे हैं। तुम्हारे हाथ पाँव कीलों से जकड़े हुए हैं। सर पर काँटो का ताज है। तुम्हारा खून बह रहा है, तुम्हें कोड़ों से भी मार पड़ी है। और तुम ुद मरने वाले हो, तुमने औरों को मौत से बचाया, बीमारों का स्वस्थ किया अंधों को आँ दी, लंगड़ों का चलाया, कोढ़ियों के कोढ़ को तुमने शुद्ध किया। बहुत भले काम किये, तुम स्वयं उतर कर क्यों नहीं आते हो।

प्रभु यीशु ने क्रूस पर से पुकार कर कहा हे पिता इन्हें क्षमा करो क्योंकि ये नहीं जानते हैं कि क्या कर रहे हैं।" जो वहाँ पर धर्म गुरू थे वे कह रहे थे, तुमने अपने आप का ख्रिस्त (मसीह) कहा "जो बाईबल की भविष्यवाणी के मुताबिक पाप मोचन के लिये आने वाले थे। तुम बचाने के लिये आये हो तुम अपने आप को तो बचाओ क्रूस पर से उतर कर आओ, ताकि हम विश्वास करें।

लोग वहाँ से गुज़र रहे थे जो एक आम रास्ता था और शहर के बाहर था। वहाँ से यात्री लोग गुज़र रहे थे उन्होंने भी सिर हिला हिला कर उसकी निंदा की।

बाजू में जो दो डाकू थे वे भी शुरू में निंदा कर रहे थे। उनमें से एक डाकू को प्रभु यीशु कुछ फरक लगे, उसने कहा हम तो अपने अपराधों की सही सज़ा भुगत रहे हैं। हमने तो बगावत की थी, लेकिन ये निष्पाप है। उसने दूसरे डाकू से कहा, हमारी सज़ा तो जायज़ है लेकिन ये निष्पाप आदमी मर रहा है। जब प्रभु यीशु क्रूस पर लटके थे, तब इस डाकू ने उस लकड़ी की तख्ती पर लिे नाम को देा होगा जहाँ लिा है "ये यहूरियों का राजा है।" और फिर उसने सोचा हम तो मारने वालों को गालियाँ दे रहे हैं। पर ये व्यक्ति उन लोगों को क्षमा कर रहा है। इस व्यक्ति में विषेशता है। फिर जब उसने लोगों को यह कहते हुऐ सुना कि इसने बहुतों को बचाया था और अपने आप को नहीं बचा पा रहा है तब इस डाकू के अंदर विश्वास जाग उठा कि अवश्य ही इस व्यक्ति ने बहुतों को बचाया है। और ये मुझे भी बचा सकता है। और तब उस डाकू ने क्रूस पर लटके हुऐ प्रभु यीशु से निवेदन किया और कहा जब आप अपने स्वर्ग राज्य में आयें, तो मेरी भी सुधी रेना उस डाकू ने क्रूस पर लटके हुए और स्वयं बलिदान देते हुए प्रभु यीशु से याचना की कि उसे मोक्षदान मिल सके।

एक डाकू जिसने बगावत की थी दुनिया ने उसे क्षमा नहीं किया, सरकार ने उसे क्षमा नहीं किया उसके घर वालों ने उसे क्षमा नहीं किया, लेकिन क्रूस पर लटके हुए प्रभु यीशु ने उसे क्षमा कर दिया। क्या सोचते हैं आप? क्रूस पर लटकते हुये यीशु ने कहा आज ही तुम मेरे साथ स्वर्गलोक में होगे, बगावत करने वाले हत्यारे व्यक्ति को मोक्षदान मिला।

कैसी तस्वीर है उस क्रूस पर जहाँ एक तरफ सबसे पवित्र व्यक्ति ईष अवतार प्रभु यीशु क्रूसित हैं। और उनके बाजू में उसी समय दुनिया को सबसे गंदा पापी हत्यारा मर रहा है। लेकिन परमेश्वर की खुशखबरी यही है। कि हत्यारे व्यक्ति को भी प्रभु यीशु में क्षमा मिल जाती है। यही प्रभु यीशु का शुभ संदेश है। कि सबसे गंदे मनुष्य को, पापी को उसकी आखरी सांस तक भी मोक्ष प्राप्त हो सकता है। और स्वर्गराज्य का वरदान मिल सकता है

क्या सोचते हैं? आप आना चाहेंगे, आप के पाप चाहे कितने भयानक क्यों न हो या आप कितने गिरे हुए इन्सान क्यों न हों, चाहे अभी तक आप धर्म की आड़ में अधर्म में जीते हैं। तो भी आ जाइये वो आप को क्षमा करेंगे नया जीवन देंगे।

मृत्युंजय प्रभु यीशु

चलिये चलते हैं। यरुशलम शहर से बाहर क्रूस के पास नज़दीक कब्र जो बाग में चट्टान में खुदी हुई है।

यीशुस्ता मुवाच, अहं पुनरुत्थानं जीवनञ्च। मयि यो विश्वसिति स मृत्वापि जीविष्यति, यः कश्चिच्च जीवति मयि विश्वसिति च, सोऽनन्तकाले ऽपि नैव मरिष्यति।

यहून्ना 11:24,25

यीशु ने उस से कहा "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ। जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, यदि वह मर भी जाये तो भी वह जीऐगा। और जो जीवित है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्त काल तक नहीं मरेगा।

ये वचन प्रभु यीशु ने कहे जैसे पहले बताया गया था क्रूस पर उन्होंने मृत्यु उठाई, उसके पश्चात् उन्हें दफनाया गया नज़दीक में ही एक बाग था, उसमें एक चट्टान में खुदी हुई कब्र में प्रभु यीशु को रख दिया गया, कब्र के द्वार पर एक बड़ा पत्थर बंद रखने के लिये रखा था। कब्र को बंद करके सरकारी मोहर में रख दिया गया था।

प्रभु यीशु ने अपनी मृत्यु के पहले कहा था कि मृत्यु के उपरान्त तीसरे दिन मैं जीवित हो जाऊँगा। इसलिये वहाँ के जो धार्मिक अंध फरीसी लोग थे वे गवर्नर के पास गये। और अधिकारियों से कहा कि इस व्यक्ति ने मरने के पहले कहा था कि में तीसरे दिन जीवित हो जाऊँगा। इसलिये पहरूओं को कब्र पर तैनात कर दिया जाये क्योंकि संभव है कि उसके शिष्य उसके शव को चुरा लेंगे, और दुनिया से कहेंगे कि वो जीवित हो गया है। तब रोमी शासक जो पीलातुस गर्वनर था उसने अपनी मोहर लगाकर कब्र को पत्थर के बड़े खंड से बंद कर दिया।

तीसरे दिन सबेरे सबेरे प्रभु यीशु जीवित हो गये, और जीवित होकर वो बाहर आऐ, कब्र का पत्थर लुड़क गया और जो पहरूऐ थे वे घबराकर जमीन पर गिर पड़े। और उन्होंने जाकर अधिकारियों और धर्माधिकारियों को सूचना दी की प्रभु यीशु जीवित हो गये हैं। बाईबल में लिा है, धर्मगुरूओं ने पहरूओं

को रिश्वत में पैसे दिये और कहा कि जब लोग पूछें तो कहना जब हम रात को सो रहे थे, तो उसके शिष्य रात को उसे चुरा कर ले गये, और ये सत्य किसी के कानों में न आये। लेकिन सत्य ऐसे छिप नहीं सकता है।

उसके शिष्य जब कब्र पर आये तो क्रब खाली थी। कब्र के अंदर फरिश्ते बैठे हुऐ थे, उन्होंने शिष्यों से कहा, कि तुम जीवित व्यक्ति को मरे हुओं में क्यों ढूँढ रहे हो। प्रभु यीशु वास्तव में जीवित होकर बाहर आ गये थे, जीवित होने के बाद प्रभु यीशु सैकड़ों लोगों को दिाई दिये।

अपने शिष्यों से भी वे कई बार आकर मिले। एक बार जब वे एक बंद कमरे में बैठे थे तब प्रभु यीशु उनके बीच दीवार से पार हो अंदर आते हैं। और अपने हाथों और पैरों के घाव के निशान उन्हें दिखाते हैं। शिष्य शुरू में डरे, उन्होंने सोचा कहीं ये भूत प्रेत तो नहीं है। लेकिन प्रभु यीशु ने कहा मत डरो, और उन्होंने उसके पसली में भाले के घाव और हाथ और पैर में कीलों के निशान दे।

प्रेत के पास शरीर नहीं होता है। प्रभु यीशु ने कहा लाओ, रोटी दो मुझे में तुम्हारे सामने ाता हूँ। हाँ मैं वही तुम्हारा प्रभु यीशु हूँ, मैं मारा गया था पर अब जीवित हो गया हूँ।

ये सत्य है कि आज प्रभु यीशु जीवित हैं। दुनिया के सामने वे प्रगट हुऐ और सैकड़ों लोगों को यरुशलम और उसके आस पास के गावों में दिाई दिये। लोगों से बातें की। एक बार सौ से अधिक लोगों के समूह में एक साथ और एक बार पाँच सौ लोगों के मध्य में वे उपस्थित हुए।

इन मुलाकातों में भी उन्होंने ईश्वरीय राज्य के भेदों को और परमेश्वर के प्रेम के बारे में लोगों को बताया। और जी उठने के चालीसवें दिन उनका स्वर्गारोहण यरुशलम के बाहर जैतून के पहाड़ पर से हुआ।

आज प्रभु यीशु मरे हुए नहीं हैं और हम किसी कब्र में जाकर चादर चढ़ाते हुए या अगरबत्ती जलाके पूजा पाठ नहीं करते हैं। क्योंकि प्रभु यीशु तो कब्र से बाहर आ गये हैं। और यरूशलम शहर में आज आप यदि जायेंगे तो आपको खुली हुई, प्रभु यीशु की कब्र, आज भी दैने को मिलेगी

आज हम प्रभु यीशु की भक्ति व आराधना आत्मा में होकर सच्चाई से करते हैं। कई गिरजा घरों में यीशु की मूर्त्ती बना कर ईसाई लोग रख लेते

हैं, ये सरासर गलत है, और परमेश्वर के नियमों के अनुसार पाप है। कई नामधारी ईसाई प्रभु यीशु की तस्वीर बनाकर उसकी पूजा करने लगते हैं। ये पाप है, जीवित परमेश्वर की न कोई तस्वीर बनती है न मूर्त्ती, प्रभु यीशु की तस्वीर की ज़रूरत नहीं है। और उसकी मूर्त्ती की आवश्यक्ता नहीं है। इसलिये की वो जीवित हैं। और जीवित प्रभु यीशु की जीवित आत्मा में होकर सत्य और आत्मा से आराधना करनी होगी,

जब हम प्रार्थना करते हैं, तो वो हमारी प्रार्थना को सुनता है। जब हम अपनी ज़रूरतों को उसके सामने रेते हैं, तो वो हमें उत्तर देता है।

आप आज प्रभु यीशु के पास आ सकते हैं, वो जीवित हैं, और हमारे पास आज आशा है। क्योंकि यीशु स्वयं मरे हुओं में से जी उठे हैं। और उन्होंने कहा जो व्यक्ति मुझ पर विश्वास करेगा वह कभी नहीं मरेगा

अर्थात् उसको मोक्ष हासिल होगा, सनातन जीवन, सार्वकालिक जीवन और परमेश्वर के स्वर्गलोक में अनंत जीवन का वो भागीदार होगा।

प्रभु यीशु ने कहा जिसने मुझ पर विश्वास किया है, वह चाहे मर भी चुका हो तो भी वह जीवित किया जायेगा।

प्रभु यीशु ने स्वयं घोषणा की "पुनरुत्थान और जीवन में हूँ" जो मुझ पर विश्वास करेगा वह नाश नहीं होगा पर अनंत जीवन पायेगा।

बाईबल कहती है, जो प्रभु यीशु में मरे हुऐ हैं। वो प्रभु यीशु के इस संसार में दोबारा लौटने पर जीवित हो जायेंगे। चाहे वो दफनाये गये हों, जलाये गये हों या किसी भी विधी से ही उनका अंतिम संस्कार क्यों न किया गया हो उस पर विश्वास करने वालों को अंनत जीवन की आशा है। और इसका प्रमाण ये है कि प्रभु यीशु स्वयं सारे अधिकार और शक्ति के साथ मृत्यु पर विजय प्राप्त कर जीवित हो उठे हैं।

आज प्रभु यीशु से निवेदन करिये उस आत्मिक जीवन के लिये, जिसमें आशा है। आनन्द है, शान्ति और सार्वकालिक स्वर्ग का जीवन है।

प्रभु यीशु ने कहा में तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जा रहा हूँ, और समय आने पर मैं दोबारा इस संसार में आऊँगा। ताकि उन लोगों को जीवित करूँ जो मुझ पर विश्वास करते हैं। यह सब सत्य वचन है। जैसे प्रभु यीशु का जन्म, मृत्यु और पुनरुत्थान सत्य है, वैसे ही उनका दोबारा आना भी एक

वास्तविक्ता है। जैसे वो सैकड़ों लोगों के देखते स्वर्ग की तरफ चले गये थे उसी तरह लाखों लोगों की नज़र में वे दोबारा धरातल पर उतरेंगे, परमेश्वर के राज्य की स्थापना करेंगे और हर घुटना उनके सामने झुक जायेगा, और हर जीभ अंगीकार करेगी की यीशु ही प्रभु मोक्ष दाता हैं।

हमें इन बातों पर विश्वास करना होगा क्योंकि ये वचन स्वयं उन्होंने कहे हैं। और उनके अनुसार, स्वर्ग और पृथ्वी टल जायेगी, लेकिन प्रभु यीशु के मुँह से निकले वचन कभी नहीं टलेंगे।

आज जीवित प्रभु यीशु के हाथों लाखों लोगों ने बीमारियों से शिफ़ा पाई है। भूत प्रेतों के आतंक से छुटकारा पाया है। अशान्ति दूर हुई हैं। पारिवारिक कलह मिट गये हैं। और ये इसलिये कि उन्होंने एक जीवित मोक्षदाता ईष अवतार प्रभु यीशु से प्रार्थना की है।

वो प्रार्थना का उत्तर देते हैं।

आज प्रभु यीशु आपको निमंत्रण दे रहे हैं। ईश्वर से संबंध जोड़िये। प्रभु यीशु के नाम से प्रार्थना करिये यूहन्ना 3:16 में इस तरह वचन है।

परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना इकलौता पुत्र संसार में भेज दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनंत स्वर्गीय जीवन प्राप्त करे।"

मोक्ष मुफ़्त क्यों?

शिष्य थॉमसन

यतः पापस्य वेतनं मरणं
किन्त्व अस्माकं प्रभुणा यीशु ख्रीष्टे अनंत जीवनम्
ईश्वर दत्तं दानम् आस्ते।

(पाप की मज़दूरी मृत्यु है किंतु हमारे प्रभु यीशु में 'मोक्ष' परम ईश्वर का वरदान है)

(बाइबलः रोमि. 6:23)

हर व्यक्ति मोक्ष की तलाश में है, वह ढूंढता है, दूर दूर यात्रा करता है, पहले तो ईश्वर को खोजा जाये, और फिर उससे मोक्ष मार्ग पूछें और उसे प्राप्त करें।

हर धर्म मोक्ष की आवश्यकता बताता है। मनुष्य के अंतःकरण की एक आवाज़ उसे एक आनेवाले कल से आगाह करती रहती है। मनुष्य संसार में आया है, और शरीर और संसार उसकी आखिरी मंज़िल नहीं है आत्मा यहाँ से निकलकर आगे जायेगी, और मिट्टी के तत्त्वों से बना यह शरीर मिट्टी में मिल जायेगा, यह तो सभी जानते हैं। तो फिर मुक्ति, उद्धार, मोक्ष या स्वर्ग प्राप्ति तो हर व्यक्ति की ज़रूरत है। अग्निवास या अनंत नरक में आत्मा की पीड़ा को तो कोई नहीं चाहता है इसलिये कल से भयभीत होकर हर व्यक्ति मोक्ष की कीमत देने की कोशिश कर रहा है।

1. क्या हो कीमत

अपनी छोटी नज़र और अल्पबुद्धि का प्रयोग कर अधिकांश मनुष्य एक कीमत देने का विचार करते हैं। कष्टभोग करते हैं। कर्मदान चढ़ाते हैं। ज्ञान और दर्शन से खोजते हैं। धर्मस्थलों में भटकते हैं।

मोक्ष प्राप्ति के लिये कीमत पूछते हैं। और फिर अपने साधन या जेब टटोलते हैं। धनी मनुष्य अधिक धन देकर मोक्ष की संतुष्टि चाहता है। गरीब धन न होने पर कर्मदान व श्रमदान देने को तैयार होता है।

धर्म के व्यापारी मोक्ष का सौदा कराने में बिचवई का काम करते हैं। दुःखी, भयभीत, निराश, हताश मोक्षखोजी जाल में फँस जाते हैं। धन लुट जाता है। श्रम थका देता है और एक झूठी सुरक्षा पाकर मनुष्य घर आ जाता है।

2. धन संपत्ति-दान से मोक्ष प्राप्ति नहीं:

क्या हम ईश्वर को कुछ दे सकते हैं? यह असंभव है। स्वर्गधाम और सर्वब्रह्मांड का बनाने वाला स्वयं ईश्वर है। जिसने सृष्टि बनाई है और मनुष्य की रचना भी

की है। वह सर्व-सृष्टि का मालिक है। यदि हम कुछ उसे सृष्टि से निकाल कर कीमत के रूप में दें तो वह न दान है न दक्षिणा है, और न कीमत है। क्योंकि वह सब कुछ पहले से ही परम ईश्वर का है। हमारी धन संपत्ति हम ने ईश्वर से प्राप्त की है। तो हम क्या दान दें? हम क्या कीमत दें?

3. परमेश्वर के महान ब्रह्मांड में, मनुष्य की निर्बलता को तो देखें

इस ब्रह्मांड में हमारी पृथ्वी एक धूल के कण के समान है। हमारा सूर्य हमसे दस लाख गुना बड़ा है। हमारे सूर्य से लाखों गुना बड़े सूर्य और भी हैं जो नक्षत्र या सितारे कहलाते हैं। करोड़ों सूर्यों के झुंड को गेलेक्सी या आकाशगंगा कहते हैं। और इस तरह की करोंड़ों गेलेक्सियाँ हम शक्तिशाली टेलिस्कोप से देख सकते हैं।

हमारी एक गेलेक्सी जिसका नाम 'मिल्की वे' है, उसके एक छोर से दूसरे छोर तक जाने के लिए 300,000 किलोमीटर प्रति सैकेंड जो प्रकाश की गति है, से 100,000 वर्ष लगेंगे, अंदाज़ लगाने के लिये इन करोड़ों गेलेक्सियों में से यदि आप दस गेलेक्सियों की यात्रा यदि 300,000 किलोमीटर प्रति सैकेंण्ड से करेंगे तो कम से कम एक करोड़ वर्ष लगेंगे।

इस भीमकाय ब्रह्मांण्ड को जिसे एक जीवित परम ईश्वर ने बनाया है, उसकी तुलना में हमारी अपनी पृथ्वी एक धूल के कण के समान है, और यदि इस तिनके को शक्तिशाली माइक्रोस्कोट से देखें तो इस तुलना में हम मनुष्य एक छोटे जीवाणु के समान शायद दिखाई देंगे।

और अब सवाल ये है, कि ये छोटा जीवाणु की तरह मनुष्य अपने घमंड और गर्व से इस असीमित सृष्टि के बनानेवाले कर्त्ता परम ईश्वर को अपने मोक्ष के लिये कुछ भौतिक वस्तु या धन, या प्रयास, या श्रम कीमत के रूप में देना चाहता है। इसको समझने के लिये एक उदाहरण लें, जैसे एक धनी राजा जिसके पास करोड़ों टन सोना और हीरे जवाहरात हैं। और इस राजा को एक अपराधी नागरिक एक रुपया दान कर खुश करना चाहता है, या अपने अधर्म की कीमत के रूप में देना चाहता है। कैसा है ये तर्क? क्या इस रास्ते से मुक्ति की आशा है? आप मेरे साथ अवश्य सहमत होंगे, कि यह रास्ता मूर्खतापूर्ण है। और असंभव है।

प्रेम करनेवाला परम ईश्वर जीवित सृष्टिकर्त्ता है। उससे मिलन, पाप मोचन, संकट मोचन और आत्मा का मोक्ष कोई भौतिक वस्तु या दान-पुण्य या धन से नहीं खरीदा जा सकता है।

4. कर्म-दान से मोक्ष प्राप्ति नहीं

मात्र अच्छे कर्म से मोक्ष क्यों हासिल नहीं होता है? वो इसलिये कि पाप केवल कर्म ही से नहीं, पर हमारे विचारों और उद्देश्यों में बीज के रूप में छिपा हुआ हमारे

मन और हृदय में बसा रहता है। हत्या पाप का बाहरी फल है, पर इसका छिपा हुआ बीज क्रोध है। जैसे बलात्कार पाप का बाहरी फल है पर इसके छिपे बीज कामुकता या वासना के गंदे विचार हृदय में हैं। चोरी पाप का बाहरी फल है, पर इसका बीज लालच के रूप में हृदय में है। तो परिणाम यह है, कि फल रूपी कर्मों के सुधार से या निवारण से, पाप का बीज छिपा हुआ जो हृदय और मन में है वह नहीं निकलता है। पापी विचार और उद्देश्य हमारे अंदर हमें पापी साबित करते रहते हैं।

इसलिये अच्छे कर्म करके अपनी कोशिश या गर्व से मोक्ष प्राप्त करना, एक गंदे बरतन का बस बाहर से साफ कर इस्तेमाल करना है, यह रास्ता संभव नहीं है। यह अंदर की बीमारी का बाहरी इलाज है।

ऊपर से तो हम अपने-अपने धर्म के चाहे वो कोई धर्म क्यों न हो, भक्त लगते हैं, अच्छे दिखते हैं, पर अंदर झूठ, अधर्म क्रोध और लालच से भरे हैं। यह हमारी बाहरी आँखों से तो हमें दिखाई नहीं देता है, पर परमेश्वर सब जानता है और देखता है।

5. संसारिक गुरु और ज्ञान दर्शन से मोक्ष प्राप्ति नहीं

बाईबल (यूहन्ना 3:13) में लिखा है "कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, बस केवल वही जो स्वर्ग से उतरा है (प्रभु यीशु)।"

यदि कोई सांसारिक मनुष्य अपने बुद्धि, ज्ञान, दर्शन, चमत्कार या तंत्रमंत्र से प्रभावित कर अपने पंथ में ले आये, तो इस मार्ग में न हमें पापमोचन मिलेगा न आत्मा का मोक्ष प्राप्त होगा। बस अंत मृत्यु और नरक लोक की अग्नि से मिलन होगा।

6. मोक्ष मुफ़्त है, स्वयं परम ईश्वर ने कीमत चुकाई है

परमेश्वर मनुष्य देह धारण कर संसार में आये हैं, बाईबल में यीशु जो परम ईश्वर पुत्र बन संसार में उतर आते हैं जो हमें परमेश्वर के सत्य मार्ग, ज्ञान और इच्छा को हम पर प्रगट करते हैं। मृत्यु के बलिदान के तीसरे दिन प्रभु यीशु पुनर्जीवित होते हैं। और चालीस दिन के बाद लोगों की भीड़ के देखते-देखते वे स्वर्ग की ओर चले जाते हैं। इस तरह प्रभु यीशु 'मार्ग, सत्य और जीवन' बन हमारे मोक्षदाता बनते हैं। बाईबल में लिखा है, कि आदि में सर्वसृष्टि स्वयं प्रभु यीशु ने अपने वचन की शक्ति से ही करी थी, वे स्वयं सर्वशक्तिमान परम ईश्वर हैं।

मोक्ष की कीमत बस ईश्वर ही अदा कर सकते हैं। वह इसलिये कि बस उन्हें ही मोक्ष की कीमत मालूम है। और यह कीमत है- एक पवित्र पावन बलिदान। पवित्र इसलिये क्योंकि परमेश्वर पवित्र है। इसी कारण 'प्रभु यीशु' एकमात्र सत्य अवतार बने, शरीर धारण करे और क्रूस की मृत्यु द्वारा पवित्र खून बहाये, सर्वसिद्ध बलिदान हुये। और ईश्वर के प्रेम द्वारा मनुष्य के मोक्ष की कीमत अदा होती है।

परम ईश्वर के हिसाब में मोक्ष की कीमत, और पाप का दण्ड बराबर है। और मनुष्य के बदले में यह कीमत या यह दण्ड परम ईश्वर स्वयं उठाते हैं।

अपनी मृत्युवश संतान को बचाने के लिये एक प्रेमी पिता अपना स्वयं प्राणदान करता है। मृत्यु की दवा जीवन है। मोक्ष की कीमत प्राणदान, बलिदान है। प्राणदान का कारण प्रेम है।

प्रेम ही मुक्तिमार्ग निकालता है। प्रेम ही मोक्ष की कीमत निर्धारित करता है। प्रेम ही मोक्ष का दाम है, और यह मुफ्त है, हमारा प्रयास नहीं है। परमेश्वर का वरदान है। आज प्रभु यीशु स्वर्गलोक में विराजमान हैं। और आपके मोक्षमार्ग बनकर पापमोचन कर आत्मा के ईशमिलन कराने को तैयार हैं।

बाईबल में लिखा है: परम ईश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया, कि अपने प्रिय ईष पुत्र यीशु को दान स्वरूप दिया। ताकि जो कोई उन पर विश्वास करे वे नरक के अग्निकुंड में नष्ट न हों, पर आत्मा का अनंत मोक्षदान प्राप्त करें (बाइबल यूहन्ना 3:16)

7. मोक्ष प्रार्थना

प्रभु यीशु, मैं पापी मनुष्य हूँ। मैं विश्वास करता हूँ कि आपने मेरे पापों की, और मोक्ष की कीमत अपने पवित्र खून से अदा की है। मेरे पापों को क्षमा करें। अपनी आत्मा के द्वारा नया जीवन दें। और मुझे मोक्ष प्रदान करें।

शिष्य थॉमसेन का परिचय

शिष्य थॉमसेन: शिष्य थॉमसेन का अधिकांश जीवन उत्तर भारत में बीता। स्वतंत्र रूप से सत्य की खोज करते हुए उन्होंने पाया कि सभी धर्म मनुष्य को मात्र एक नैतिक जीवन जीने तक ही प्रेरित करते हैं।

लेकिन इसके विपरीत मनुष्य की वास्तविक ज़रूरत कुछ नैतिक मूल्यों को जान लेना, और उनमें से कुछ पर अमल करना ही नहीं है। सत्य तो ये है कि यह जीवन हमारी आत्मा के लिए एक सनातन या अनंत आत्मिक जीवन का प्रारंभ है।

ईसाई धर्म का दिखावटी स्वरूप: सत्य की खोज ने उन्हें प्रभु यीशु मसीह के समक्ष ला खड़ा किया। लेकिन शीघ्र ही उन्होंने यह पहचान कि जो जीवन अधिकांश मसीहियों (ईसाईयों) का है, वो प्रभु यीशु मसीह की शिक्षाओं पर न तो वास्तव में आधारित है और ना ही उनका जीवन मसीह के जीवन से मेल खाता है।

इसके समाधान के रूप में क्या किया जाये?

क्या यह कि जीवित परमेश्वर के सत्य, अर्थात् उसके पुत्र प्रभु यीशु मसीह का तिरस्कार कर दिया जाये, उसके रास्ते को विदेशी धर्म समझा जाये.....? कदापि नहीं।

शिष्य थॉमसेन ने इसे चुनौती के रूप में लिया, व ईसाई वर्ग की नकली भक्ति और कपट का पर्दाफाश करना चालू लिया।

उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि वर्तमान मसीही विश्वास या धर्म का वह स्वरूप दिखाई नहीं दे रहा है, जो प्रभु यीशु मसीह के अनुयायियों का होना चाहिये। प्रभु यीशु मसीह पिता परमेश्वर के स्वर्गीय स्थान से मानव रूप धारण करके हमारे बीच आये थे। उन्होंने ईश्वरीय इच्छा से मानव जीवन बिताया, स्वर्गीय पिता परमेश्वर की इच्छा पूर्ण की, उन्होंने परमेश्वर, मनुष्य, जीवन, पाप व मोक्ष से संबंधित सत्य को हम पर प्रकट किया।

मनुष्य को ज्ञान हुआ कि किस तरह पाप मनुष्य के कर्म में नहीं पर हृदय में, विचारों में व उद्देश्यों में बीज के समान बसा रहता है। पाप के फलों को खत्म करने से लाभ नहीं होता, लेकिन जड़ को व बीज को निकालना ज़रूरी होता है।

नया धर्म नहीं: प्रभु यीशु मसीह नया धर्म चलाने नहीं, नया जीवन देने आये थे। उन्होंने बताया कि वे स्वयं ही जीवन, सत्य व मोक्ष के एकमात्र मार्ग हैं। क्योंकि केवल वे ही मनुष्य के पापों की कीमत अपने बलिदान से पूरा करते हैं। बाइबल कहती है, "मनुष्य के लिये पाप की मज़दूरी आत्मिक मृत्यु व सर्वनाश है।"

प्रभु यीशु मसीह मनुष्य को सनातन जीवन देने के लिये, स्वयं, क्रूस की मृत्यु सहते हैं और इसके चालीस दिन के पश्चात् लोगों के देखते-देखते उनका स्वर्गारोहण होता है।

धर्म परिवर्तन निरर्थक है: धर्म तो बाहरी दिखावा है, यदि अंत:करण में अधर्म है तब पैसे या धनशक्ति से, या सामाजिक दबावों से प्रेरित धर्म परिवंतन झूठा है। ये जीवित परमेश्वर को स्वीकार्य नहीं है, हाँ यह मनुष्य को झूठा मानसिक संतोष दिलाने में समर्थ है, लेकिन आत्मा का मोक्ष व स्वर्गीय सनातन जीवन जो परमेश्वर के साथ संगती का है उसे प्रदान करने में पूरी तरह असफल है।

हमें धर्म परिवर्तन नहीं जीवन परिवर्तन चाहिये, वह जीवन जो परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह को मुक्तिदाता स्वीकार करने से प्राप्त होता है, पापों के पश्चात्ताप करने से मिलता है। परमेश्वर प्रेरित नया जीवन मनुष्य अपनी सामर्थ से या अपने धर्म के नियमों का पालन करके या रीति-रिवाजों और त्यौहारों को मना कर नहीं प्राप्त कर सकता है।

साँसारिक शारीरिक जीवन पाप का स्त्रोत है इसलिये बाइबल बताती है कि जब प्रभु यीशु मसीह की आत्मा हमारे अंदर निवास करती है, और जीवन जीती है, तभी हम प्रभु यीशु मसीह के नये जीवन को संसार में प्रगट कर सकते हैं। दिखावे के मसीही (ईसाई) जीवन को चुनौती देते हुऐ, आज शिष्य थॉमसेन सच्चा मसीही जीने का आह्वान करते हैं।

SHISHYASHRAM
[Registered under Indian Trust Act, 1882 Reg.no-2401]
305 D/A Sheeshmahal, Shalimar Bagh, New Delhi-88 *e-mail:* jawabjawab@yahoo.com